9.3

शार्ङ्गदेव समारोह
ŚĀRṄGADEVA SAMĀROH

शार्ङ्गदेव समारोह
ŚĀRṄGADEVA SAMĀROH

23-25 फरवरी 1994, स्वतन्त्रता भवन सभाग्रह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
23-25 February 1994, Swatantrata Bhawan, Banaras Hindu University, Varanasi

शार्ङ्गदेव समारोह

इस समारोह को दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है, प्रथम भाग में शार्ङ्गदेव तथा उनकी अमर कृति संगीत-रत्नाकर पर बृहत् संगोष्ठी आयोजित की जा रही है और दूसरे भाग में संगीत गोष्ठियों की श्रृंखला प्रदर्शित की जा रही है, जिनका एक निश्चित उद्देश्य है। यहां पर शास्त्रीय विधा को उत्कृष्ट प्रयोग के साथ संयोजित करने का प्रयत्न किया गया है।

संगीत व नृत्य गोष्ठियों की योजना इस प्रकार से बनाई गई है ताकि संगीत-रत्नाकर में अभिलेखित प्रयोग-परम्पराओं के साथ जुड़े सम्पर्क सूत्र प्रस्तुत किये जा सकें। ध्रुपद का प्रबन्ध-रूप-विशेष के साथ प्रत्यक्ष संबंध है। इसी प्रकार विचित्र वीणा, 'जिथर' — एकतंत्री — का एक सुधरा हुआ रूप है, जिसका इस कृति में विस्तृत रूप से उल्लेख किया गया है। कर्णाटक-वीणा 'जिथर' का ही अनुवर्ती रूप है, यह गर्दन वाली 'ल्यूट' है और रूद्रवीणा नाम से अभिहित की गई है। पुनश्च, हिन्दुस्तानी रूद्रवीणा किन्नरी-वीणा का अनुवर्ती रूप है, जिसका इस कृति में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। कर्णाटक पद्धति की गायन शैली का भी प्रबन्ध परम्परा के साथ सम्बन्ध है।

जहां तक नृत्य का संबंध है, संगीत-रत्नाकर में वर्णित एक पुनर्निर्मित रूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है या फिर ऐसे प्रतिष्ठित आंचलिक रूपों को प्रस्तुत करने का प्रयास है जिनका इस कृति से प्रत्यक्ष संबंध है, भले ही इसमें उनके नामों का उल्लेख न हुआ हो। इन नामों का उद्भव निश्चय ही बाद में हुआ है, किन्तु इन रूपों का वाचिक-परम्परा के साथ सुदृढ़ संबंध है, जिनका अंकन इस कृति में किया गया है। हम पेरिणी नृत्य प्रस्तुत करने जा रहे हैं जिसका उल्लेख ग्रंथ में पुरुषों द्वारा किये गये शैवनृत्य के रूप में हुआ है। हम भरतनाट्यम् विधा में रचित नृत्य संरचना के दो प्रयोग भी प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनमें से दूसरे में, मोहिनीआट्टम् के कुछेक तत्त्वों को भी सम्मिलित किया गया है। इनमें से पहले का विषय वस्तु पंचमहाभूत है। भारतीय दार्शनिक चिन्तन में पंचमहाभूतों को प्रवलता के साथ स्थापित किया गया है जिनमें सभी कलाओं को संकल्पनात्मक प्रतिपादन के रूप में अभिव्यक्ति मिली है। चूंकि संगीत-रत्नाकर चिन्तन की इसी धारा का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिये यह विषय हमारे आयोजन से जुड़ता है। दूसरा प्रस्तुतीकरण महाराष्ट्र के भक्त कवियों की गीत रचनाओं को समर्पित है। वह स्थान जहां शार्ङ्गदेव ने इस कृति की रचना की थी उसका नाम देवगिरी (दौलताबाद) है जो आज के मराठवाड़ा में स्थित है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह महाराष्ट्र का एक भाग है। इसके अतिरिक्त, शार्ङ्गदेव महाराष्ट्र के भक्ति आन्दोलन के प्रवर्त्तक सन्त ज्ञानेश्वर के समकालीन थे। इस अंचल के भक्त कवियों की गीत-रचनाएं ज्ञानेश्वर सम्प्रदाय का अभिन्न अंग हैं और इसलिए शार्ङ्गदेव के साथ इनका गहन संबंध होने की बात सुस्पष्ट है।

— डॉ. प्रेमलता शर्मा
शैक्षिक परामर्शदाता

ŚĀRṄGADEVA SAMAROH

The Samaroh has two components — one a major seminar on "Śārṅgadeva and his immortal work Saṅgīta-ratnākara" and the other, a series of concerts that have a definite purpose and orientation. Here is an attempt to combine scholarly endeavour with excellence in performance.

The concerts have been planned with a view to presenting links with the performance traditions recorded in *Saṅgīta-ratnākara* e.g. dhrupad embodies a direct link with *prabandha* form. Similarly vichitra vīṇā is an improved version of the unfretted zither — ekatantri — elaborately described in this work. The Carnatic vīṇā is the successor of the zither, rudra vina in lute form. Rudra vīnā in turn is the successor of the kinnarī vīṇā described elaborately in this work. Carnatic vocal music too has links with the *prabandha* tradition recorded in Saṅgīta-ratnākara.

Regarding dance, an attempt has been made to present either the reconstruction of a form described in Saṅgīta-ratnākara or established regional forms that have direct connections with this work although their names do not find a place therein. The names are definitely of later origin, but the forms have strong links with the textual tradition consolidated by this work. We present perini dance that is mentioned in it as a male Shaivaite dance. We also present two items choreographed in the Bharatanatyam form, the second one also incorporating some movements of Mohiniattam. The theme of the first is Pancha-mahabhuta; the concept of five *mahabhutas* is strongly embedded in Indian philosophical thought finding manifestation in the conceptual treatment of all the arts. Since Saṅgīta-ratnākara represents this stream of thought hence this theme is germane to our festival. The second presentation is devoted to the compositions of *bhakta* poets of Maharashtra. The place where Śārṅgadeva composed this work, viz. Devagiri (Daulatabad) is situated in present-day Marathwada. Culturally it forms part of Maharashtra. Moreover, Śārṅgadeva was an earlier contemporary of Sant Jnaneshwar, the founder of the *bhakti* movement of Maharashtra. The compositions of *bhakta* poets of this region form part of the lineage of Jnaneshwar and hence a deep connection with Śārṅgadeva is obvious.

— Dr. Premlata Sharma
Academic Consultant

बुधवार 23 फरवरी

पखावज
शंकरराव मारूतिराव शिंदे

संगत:

उद्धव शिंदे : पखावज

शंकरराव मारूतिराव शिंदे
श्री शंकरराव मारूतिराव शिंदे का जन्म सन् 1913 में महाराष्ट्र में हुआ। इन्होंने मथुरा के श्री माखनजी भैया से पखावज में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इन्होंने अपने जीवन के लम्बे अन्तराल में व्यापक रूप से प्रदर्शन किया है और इस दौरान बहुत से प्रसिद्ध संगीतज्ञों के साथ पखावज पर संगत की है। एकल वादक के रूप में भी इन्हें प्रसिद्धि मिली है। हाल के वर्षों में इन्होंने अनेक छात्रों को पखावज वादन में प्रशिक्षित किया है।

संगीत की उत्कृष्ट सेवाओं और इसके प्रचार-प्रसार के लिए शंकरराव शिंदे विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित किये गये हैं जिनमें भारत सरकार से प्राप्त "पद्मश्री" उल्लेखनीय है।

Wednesday 23 February

PAKHAWAJ
Shankarrao Marutirao Shinde

Accompanied by:

Uddhav Shinde: Pakhawaj

Shankarrao Marutirao Shinde
Born in 1913 in Maharashtra, Shankarrao Marutirao Shinde received his training in Pakhawaj from Shri Makhanji Bhayya of Mathura.

He has performed widely over a long career, accompanying many noted musicians on the Pakhawaj. He has also won acclaim as a soloist. Over the years he has trained many students in the art of pakhawaj playing.

For his outstanding service to music and its propagation Shankarrao Shinde has been honoured with various awards and honours — among them is the 'Padmashri' from the Government of India.

ध्रुपद
ज़िया फरीदुद्दीन डागर

संगत:

ऋत्विक सान्याल : गायन संगति

श्रीकान्त मिश्रा : पखावज

ज़िया फरीदुद्दीन डागर
ज़िया फरीदुद्दीन डागर का जन्म 1933 में उदयपुर में हुआ। इन्होंने उस्ताद ज़ियाउद्दीन डागर तथा ज़िया मोहिउद्दीन डागर से ध्रुपद का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रदर्शक और अध्यापक दोनों रूपों में संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कीर्तिमान स्थापित करने के लिये ये सदैव कार्य करते रहे। इन्होंने देश के भीतर व्यापक रूप से अपनी कला का प्रदर्शन किया तथा यूरोप में डागर-वाणी के प्रमुख व्याख्याता के रूप में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। ये एक नियमित प्रसारक हैं तथा इन्हें अनेक ख्यातियां प्राप्त हुई हैं।

इनके छात्रों में गायक ऋत्विक सान्याल, उमाकान्त तथा रमाकान्त गुंदेचा, उदय भावलकर और उनके भतीजे रूद्रवीणा वादक बहाउद्दीन सुप्रसिद्ध हैं।

DHRUPAD
Zia Fariduddin Dagar

Accompanied by:

Ritwik Sanyal: Vocal support

Shrikant Mishra: Pakhawaj

Zia Fariduddin Dagar
Born in 1933 in Udaipur, Zia Fariduddin Dagar received his training in Dhrupad from Ustads Ziauddin Dagar and Zia Mohiuddin Dagar.

Both as performer and teacher he has pursued a serious career in music. He has performed widely within the country and in Europe as a leading exponent of Dagar-bani. He is a regular broadcaster and has several discs to his credit. Among his students are well-known vocalists Ritwik Sanyal, Umakant and Ramakant Gundecha, Uday Bhawalkar and his nephew Rudra veena player Bahaudin Dagar.
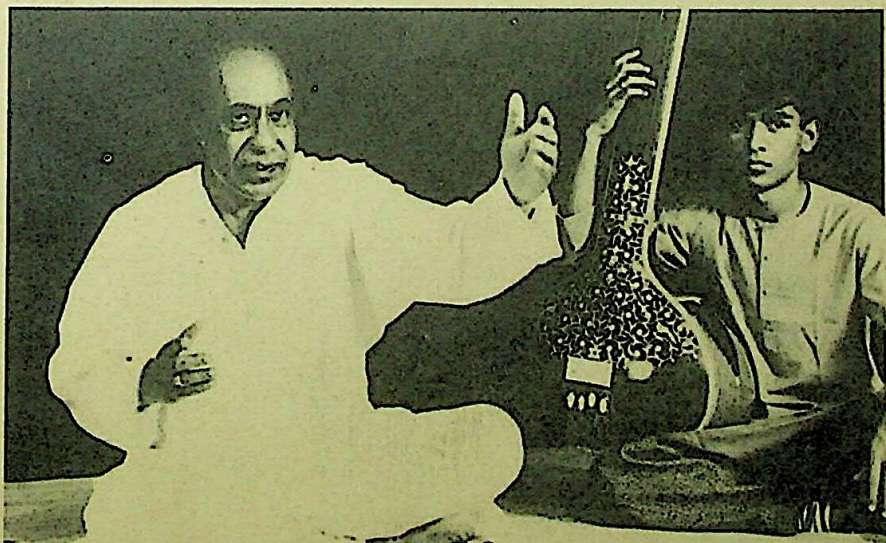
कर्नाटक संगीत
राजेश्वरी पद्मनाभन : वीणा

संगतः

तान्जोर एस. सुब्रह्मणियम् : मृदंगम्

राजेश्वरी पद्मनाभन

श्रीमती राजेश्वरी पद्मनाभन का जन्म सन् 1939 में तमिलनाडु में हुआ। इन्होंने श्री वी. के. साम्बशिवा अय्यर से वीणा एवं श्री मैसूर वासुदेवाचार्यार से कर्नाटक गायन सीखा। ये वाद्यसंगीतज्ञों के लब्धप्रतिष्ठ परिवार की नौवीं पीढ़ी की संगीतज्ञ हैं और ये परम्परा को विशिष्ट व्यष्टिगत प्रतिभा के साथ सम्मिश्रित करती हैं।

कलाक्षेत्र, मद्रास में वीणा की अध्यापिका, श्रीमती पद्मनाभन को तमिलनाडु सरकार द्वारा प्रदत्त कलैमामणि की उपाधि से 1981 में विभूषित किया गया।

संगीत के क्षेत्र में श्रेष्ठता और संगीत कला की संवृद्धि में उनके योगदान के लिये श्रीमती राजेश्वरी पद्मनाभन को 1986 में कर्नाटक वाद्य संगीत के लिये संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

CARNATIC MUSIC (VEENA)
Rajeshwari Padmanabhan

Accompanied by:

Tanjore S. Subramaniam : Mridangam

Rajeshwari Padmanabhan

Born in 1939 in Tamil Nadu, Shrimati Rajeshwari Padmanabhan learnt Veena from Shri V.K Sambasiva Iyer and Carnatic vocal music from Shri Mysore Vasudevacharyar. A ninth-generation musician from an illustrious family of instrumentalists, she combines tradition with a marked individual talent.

A teacher of Veena at Kalakshetra, Madras, Shrimati Padmanabhan was hounoured in 1981 with the title of Kalaimamani conferred by the Government of Tamil Nadu.

For her eminence in the field of music and her contribution to its enrichment Shrimati Rajeshwari Padmanabhan received the Sangeet Natak Akademi Award for Carnatic Instrumental Music in 1986.
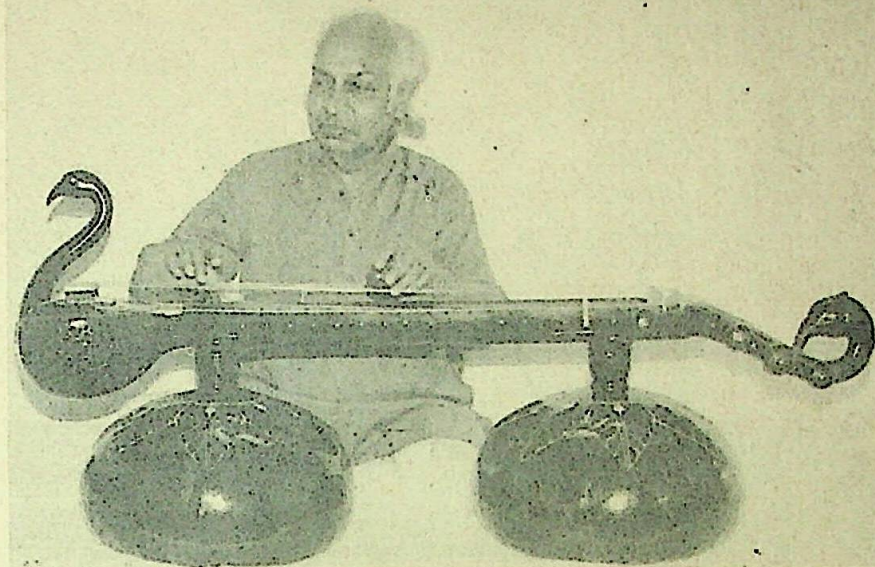
बृहस्पतिवार 24 फरवरी

विचित्र वीणा
गोपाल कृष्ण

संगतः

राधेश्याम : तबला

गोपाल कृष्ण
संगीतज्ञों के परिवार में जन्मे गोपाल कृष्ण ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता पंडित नन्द किशोर से प्राप्त की। तत्पश्चात्, पंडित खूबचन्द ब्रह्मचारी से प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाद में इन्होंने पंडित रवि शंकर के अग्रवर्ती शिष्य बन कर अपनी वीणा वादन शैली को परिष्कृत किया।

विचित्र वीणा के प्रसिद्ध प्रतिनिधियों में से गोपाल कृष्ण का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने प्रसारक एवं संगीत समारोहों में सफलता प्राप्त की। सन् 1949 से अपनी सेवा निवृत्ति तक ये आकाशवाणी से जुड़े रहे। परम्परागत मूल्यों को बरकरार रखते हुए विचित्र वीणा में इन्होंने अनेक अभिनव परिवर्तन किये हैं। इस प्रकार इन्होंने वाद्य संगीत के क्षेत्र में नये आयामों को जोड़ा है।

Thursday 24 February

VICHITRA VEENA
Gopal Krishna

Accompanied by:

Radhey Shyam: Tabla

Gopal Krishna
Born in 1926 in a family of musicians Gopal Krishna received his initial training in music from his father Pandit Nand Kishore, later under Pandit Khubchand Brahmchari and polished his style under Pandit Ravi Shankar as one of his foremost disciples.

One of the few eminent exponents of Vichitra Veena, Gopal Krishna has had a successful concert career and broadcaster. He joined All India Radio in 1949 and served until his retirement recently. While maintaining the traditional values he has made several innovations on the Vichitra Veena adding new dimensions to the field of instrumental music.

बृहस्पतिवार 24 फरवरी

पंचमहाभूत

सी.वी. चन्द्रशेखर

नृत्य श्री, वडोदरा द्वारा नृत्य संरचनात्मक कार्य

प्रदर्शन के सम्बन्ध में

भारतीय कला एवं साहित्य के क्षेत्र में पंचमहाभूत का एक विशिष्ट स्थान है। इस प्रस्तुति द्वारा पृथ्वी, आकाश, जल, वायु एवं अग्नि—इन पाँच तत्त्वों की विभिन्न अवधारणाओं को दिखाने का प्रयास किया गया है। प्रथम दृश्य में अष्टमूर्ति के रूप में शिव का स्वरूप उन्हें पाँच तत्त्वों तथा सूर्य, चन्द्र और अहम् का मूर्तरूप दर्शाता है। कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् का "ध्यान श्लोक" इस अवधारणा को प्रस्तुत करता है। जल, पुष्प, धूप, चन्दन और दीप से शिव-स्तुति की जाती है जो कि आपः, आकाश, वायु, पृथ्वी और अग्नि के सामरूप हैं। बाद के दृश्यों में क्षैतिज रेखाओं द्वारा जल तत्त्व ऊर्ध्वस्थ रेखाओं द्वारा अग्नि-तत्त्व, वायु-तत्त्व के लिए तिरछी रेखाओं, पृथ्वी के लिए वर्ग एवं आकाश के

लिए निराकार का [illegible] गया है। जैसा कि वस्तुशास्त्र उपनिषद् में उपलब्ध है। महाभारत के अभिनव भारती एवं अन्य ग्रन्थों के श्लोकों द्वारा इन तत्त्वों की स्तुति विषय-वस्तु के प्रगीतात्मक सौन्दर्य को बढ़ा देती हैं।

नर्तक
सी.वी. चन्द्रशेखर, रमा श्रीकण्ठन, मंजरी चन्द्रशेखर, अमृत अकालकर, अगिला स्वामी शरद पांड्या, दर्शन पुरोहित

संगीतज्ञ
जया चन्द्रशेखर : नट्टुवंगम

विशालाक्षी कल्याणरमन : गायन

आर. नटराजन : मृदंगम्

नीला नारायणस्वामी : बाँसुरी

विभास रानाडे : वायलिन

नृत्य संरचना एवं संगीत
सी.वी. चन्द्रशेखर

प्रस्तुतकर्ता
जया चन्द्रशेखर

सी.वी. चन्द्रशेखर

सी.वी. चन्द्रशेखर वर्तमान में एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा के प्रदर्शनकारी कला संकाय के नृत्य विभाग के प्रोफेसर हैं। इन्होंने नृत्य और संगीत की शिक्षा कलाक्षेत्र, मद्रास से प्राप्त की। ये अपनी नृत्य संरचना कला का प्रदर्शन और शिक्षण कार्य लगभग चार दशकों से कर रहे हैं। इनकी रचना कृति अभिनव परिवर्तन के लिये अनूठी है। भरतनाट्यम के कल्पनाशील प्रयोग करने में अपनी प्रतिभा का दिग्दर्शन करते हुए इन्होंने इसकी शास्त्रीय मौलिकता और प्रामाणिकता को बनाये रखा है। ये अपनी अधिकतर कृतियों के लिये संगीत की भी विरचना करते हैं।

प्रोफेसर चन्द्रशेखर को उत्तर प्रदेश और गुजरात की संगीत नाटक अकादेमियों के पुरस्कारों से विभूषित किया गया है तथा कृष्ण गण सभा, मद्रास द्वारा इन्हें नृत्य चूड़ामणि पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इन्हें प्रदर्शनकारी कलाओं के क्षेत्र में प्रथम राष्ट्रीय प्राध्यापक भी नियुक्त किया गया।

PANCHAMAHABHUTA
A. choreographic work by
C.V. Chandrasekhar
Nrityashree, Vadodara

About the production
The concept of the Panchamahabhuta finds an important place in the Indian arts and literature. The present production is an effort to give a visual presentation of the various concepts of the five elements—Prithvi, Akasa, Jala, Vayu and Agni. The concept of Shiva as Ashtamurti in the opening scene symbolises Him as an embodiment of these five elements along with Surya, Chandra and Aham. Kalidasa's 'dhyana shloka' of Abhignyana Shakuntalam projects this concept. Prayers are offered to Shiva with Jala, Pushpa, Dhupa, Chandana and Deepa which correspond to the Apa, Akasa, Vayu, Prithvi and Agni. In the subsequent scenes the concepts of horizontal lines for water element, vertical for the fire, diagonal for the Vayu, square for Prithvi and the formless for the Akasa, are rendered as found in the "Vastushastra Upanishad". Prayers to these elements are drawn from shlokas from Abhinava Bharati, Mahabharata and a few other texts, which add lyrical beauty to the theme.

Dancers
C.V. Chandrasekhar, Rama Srikanthan, Manjari Chandrasekhar, Amrit Akalkar, Agila Swamy, Sharad Pandya, Darshan Purohit

Musicians
Jaya Chandrasekhar: Nattuvangam
Visalakshi Kalyanaraman: Vocal
R. Natarajan: Mridangam
Neela Narayanaswamy: Flute
Vibhas Ranade: Violin

Choreography and music
C.V. Chandrasekhar

Produced by
Jaya Chandrasekhar

C.V. Chandrasekhar
C.V. Chandrasekhar, currently a professor in the Department of Dance at the Faculty of Performing Arts, M.S. University of Baroda, had his training in dance and music at Kalakshetra, Madras. He has been performing and teaching for nearly four decades now. His work is unique for its innovative and imaginative use of the Bharatanatyam idiom while retaining its classical purity and authenticity. He also composes the music for most of his work.

Professor Chandrasekhar has been bestowed with the awards of the Sangeet Natak Akademis of Uttar Pradesh and Gujarat and with the Nritya Choodamani by Shri Krishna Gana Sabha, Madras. He was also appointed the first national lecturer in the field of performing arts by the University Grants Commission.

शुक्रवार 25 फरवरी

गायन (कर्नाटक)
मदुरै टी.एन. शेषगोपालन

संगत:

विट्ठल राम मूर्ति : वायलिन

आर. नारायणन् : मृदंगम्

मदुरै टी.एन. शेषगोपालन
तमिलनाडु, मदुरै में जन्मे श्री टी.एन. शेषगोपालन ने श्री रामनाथपुरम सी.एस. शंकरशिवम् के अधीन गायन की दीक्षा प्राप्त की। आपने मदुरै विश्वविद्यालय में संगीत के सहायक आचार्य के पद पर कार्य किया जहाँ पर आपने गायन और वीणा वादन सिखाया। गायक और वीणा वादक दोनों के रूप में संगीत रचना को जीवन वृत्ति के रूप में अपनाने में सफल रहे।

श्री शेषगोपालन ने संगीतकार के रूप में अपने को प्रतिष्ठित कर लिया है तथा इनके अनेक डिस्क और कैसेट प्रकाश में आये हैं। अन्य पुरस्कारों एवं सम्मानों के अलावा आपको तमिलनाडु सरकार की ओर से 'कलैमामणि' पुरस्कार से भी विभूषित किया गया है।

Friday 25 February

CARNATIC MUSIC (VOCAL)
Madurai T.N. Seshagopalan

Accompanied by:

Vittal Ramamurthy: Violin

Neyveli R. Narayanan: Mridangam

Madurai T.N. Seshagopalan
Born in Tamil Nadu Madurai, Shri T.N. Seshagopalan received his training in vocal music under Shri Ramanathapuram C.S. Sankarasivam. He served as Assistant Professor of Music in Madurai University where he taught vocal music and veena. He has had a successful concert career both as a vocalist and a veena player.

Shri Seshagopalan has distinguished himself as a composer and has a large number of discs and cassettes to his credit. Among other awards and honours, he has received the "Kalaimamani" from the Government of Tamil Nadu.

पेरिणी शिव ताण्डवम्
नटराज रामकृष्ण के शिष्यगण
पेरिणी इन्टरनेशनल, हैदराबाद

पेरिणी शिव ताण्डवम् नृत्य शैली ककातिया वंश के सम्राट गणपति देव, रूद्रम्मा और प्रतापरूद्रा के राज्यकाल में विकसित हुई, जिन्होंने तेलुगुदेश पर 10वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक राज्य किया। शिव या पशुपति के पुजारी होने के नाते इन्होंने वीर रस का प्रतिपादन करते हुये ओजस्वी नृत्य प्रस्तुत किया।

सात शतकों के अन्तराल के बाद डॉ नटराज रामकृष्ण ने पुरातन पाठ्य ग्रन्थों और आन्ध्र प्रदेश वारंगल के रामप्पा मंदिर की भीतियों पर निर्मित मूर्तियों के गहन अध्ययन के बाद पेरिणी शिव ताण्डवम् को पुनर्जीवित किया।

नर्तक
पेरिणी कुमार, पेरिणी विट्ठल, पेरिणी प्रकाश, पेरिणी महेश, पेरिणी श्रीधर

संगीतज्ञ
कला कृष्ण : नट्टुवंगम

धूपम् सूर्यलिंगम : ताल वाद्य

बलराम : ताल वाद्य

पी. वेन्कट राव : गायन

पी. शास्त्री : शहनाई

सहयोग
जी. सूर्य नारायण

नटराज रामकृष्ण
बाली में 1933 में जन्मे श्री नटराज रामकृष्ण अपने जीवन के प्रारम्भिक अवस्था में शास्त्रीय नृत्य में दीक्षित हुये थे। इन्होंने मीनाक्षी सुन्दरम् पिल्लै, वेदान्तम् लक्ष्मीनारायणम् शास्त्री, नायडूपेटा राजम्मा तथा पेनड्येला सत्यभामा जैसे प्रख्यात गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और बान्द्रा स्टेट के दरबार से जुड़े रहे। डा. नटराज रामकृष्ण अनेक कृतियों के रचयिता हैं। इन्होंने पेरिणी शिव ताण्डवम् को पुनर्जीवित करने के लिए गहन शोध कार्य किया। नृत्य कला को समृद्ध बनाने के सम्बन्ध में उनके विशिष्ट योगदान के लिए उन्हें संगीत नाटक अकादेमी द्वारा वर्ष 1983 में सम्मानित किया गया तथा भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' पुरस्कार से विभूषित किये गये।

PERINI SHIVA THANDAVAM
Disciples of
Nataraja Ramakrishna
Perini International, Hyderabad

Perini Shiva Thandavam was a dance form that flourished during the rule of emperor Ganapathi Deva, Rudrama Devi and Prataparudra of the Kakatiya dynasty who ruled Telugu country from 10th to 13th centuries A.D. Worshippers of Shiva, or Pasupatis, performed this vigorous dance depicting "Veera Rasa".

After a gap of seven centuries Perini Shiva Thandavam has been revived by Dr Nataraja Ramakrishna after a deep and thorough study of the ancient texts and the sculptures on the walls of the Ramappa Temple in Warangal, Andhra Pradesh.

Dancers
Perini Kumar, Perini Vitthal, Perini Prakash, Perini Mahesh, Perini Shreedhar

Musicians
Kala Krishna: Nattuvangam
Dhupam Suryalingam: Drum
Balaram: Drum
P. Venkat Rao: Vocal
P. Sastry: Clarionet

Assistance
G. Suryanarayana

Nataraja Ramakrishna
Born in 1933 in Bali, Dr Nataraja Ramakrishna was initiated to classical dance early in life. He received his training under eminent gurus Meenakshisundaram Pillai, Vedantam Laxminarayan, Pendyela Satyabhama. He graduated from Nagpur University and served at the court of Bandara State.

Dr Nataraja Ramakrishna has a large number of published work to his credit. He has done intensive research for the revival of Perini Shiva Thandavam. For his outstanding contribution to the enrichment of dance he has been honoured by the Sangeet Natak Akademi in 1983, and 'Padmashri' from the Government of India.

सन्त वाणी (मराठी)

कनक रेले

नालन्दा डांस रिसर्च सैन्टर, बम्बई द्वारा नृत्य संरचनात्मक कार्य

प्रस्तुति

यह कथा कृष्ण के बाल्यकाल के समय की है। (विठोबा कृष्ण के अवतार के रूप में) यह कथा महाराष्ट्र की 'कीर्तन' परम्परा पर आधारित है। काव्यगत विषय-वस्तु ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम जैसे महान् सन्त-कवियों की अमर कृतियों अभंग से उद्धृत की गई है।

विठोबा के भक्तगणों को 'वारकरि' कहा जाता है। प्रत्येक आषाढ़ एकादशी के दिन सब पंढरपुर में एकत्रित होते हैं एवं एक यात्रा निकालते हैं जिसे 'दिन्डी' कहते हैं। सायंकाल के समय इस यात्रा को किसी भी गाँव में रोक देते हैं। एकत्रित होकर 'अंभग' गा कर कथा कीर्तन करते हैं एवं प्रवचन आयोजित करते हैं। 'कथा-कीर्तन' परम्परा को इस प्रस्तुति द्वारा पुनर्निर्मित एवं पुनर्जीवित किया गया है।

नर्तक

वैभव अरेकर, प्रिय आनन्दन, श्रीनिवासन, माधुरी पाटिल, माधवी अभयंकर, सुदन्या नायक, राजेश्वरी वोरा, सीमा शेट्टी, गुलशन डभोलकर, प्रभा पोडुवल, राजश्री शिर्के, उर्मिला अभीर, क्षितिजा खेर, मोहिनी कुलकर्णी, मोहिनी लिमये, सीमा कुलकर्णी,सौम्याश्री, अंजली ठक्कर, प्रकाश चन्द्र तथा रामदास।

कार्य नामिका

कनक रेले : संकल्पना एवं नृत्य रचना

नारायण मणि : संगीत

विजया वाड : कीर्तन के गीत

कनक रेले

आपका जन्म वर्ष 1939 में हुआ। कनक रेले ने शान्तिनिकेतन में अध्ययन किया। कथकली की शिक्षा गुरु करूणाकरण पनिकर की देखरेख में पाई और मोहिनीआट्टम में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। कावालम् नारायण पनिकर जैसे ख्याति प्राप्त विद्वानों के सहयोग से उन्होंने मोहिनीआट्टम नृत्य शैली को एक नया आयाम दिया।

कथकली तथा मोहिनीआट्टम नृत्य के अग्रवर्ती व्याख्याताओं में से एक, कनक रेले ने एक उत्कृष्ट अध्यापिका तथा नृत्य पारंगता के रूप में ख्याति प्राप्त की है। इन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की है तथा बम्बई में नालन्दा नृत्य अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की है जो प्रमुख प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के रूप में काम कर रहा है। इन्होंने नृत्य संरचनात्मक क्षेत्र में विशद कार्य किया। शास्त्री नृत्य के क्षेत्र में इनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए इन्हें विभिन्न संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया है। वर्ष 1991 में आपको भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' पुरस्कार से विभूषित किया गया।

SANTA VANI (MARATHI)

A choreographic work by
Kanak Rele
Nalanda Dance Research Centre, Bombay

The production

This presentation is woven around the childhood of Krishna (Vithoba being an 'avtara' of Krishna). The narration is based on the 'Keertana' tradition of Maharashtra. The poetic content have been drawn from the Abhangas or immortal works of the great saint—poets Jnaneshwar, Namdev, Eknath and Tukaram.

Vithoba's devotees are called 'Varkari's. On every 'Asadha ekadashi' they gather at Pandharpur and undertake a procession called 'dindi'. At dusk they stop and congregate at a village to sing the 'abhanga' and hold discourses. The 'Katha-keertan' tradition has been recreated and brought alive in this production.

Dancers

Vaibhav Arekar, Priya Anandan, Srinivasan, Madhuri Patil, Madhavi Abhyankar, Sudnya Naik, Rajeshwari Vora, Seema Shetty, Gulshan Dabholkar, Prabha Poduval, Rajashri Shirke, Urmila Abhir, Ksheetija Kher, Mohini Kulkarni, Mohini Limaye, Seema Kulkarni, Soumyashree, Anjali Thakkar, Prakash Chandra and Ramdas.

Credits

Kanak Rele: Conception and Choreography

Narayan Mani: Music

Vijaya Wad: Lyrics of Keertan

Kanak Rele

Born in 1939, Kanak Rele studied at Shantiniketan. She studied Kathakali under Guru Karunakar Panikar and obtained a Ph.D. in Mohiniattam. In collaboration with eminent scholars like Kavalam Narayana Paniker she has developed a new repertoire in Mohiniattam.

One of the foremost exponents of Kathakali and Mohiniattam dance, Kanak Rele has also established herself as an outstanding teacher and dance scholar. She has many publications to her credit and has founded a major training cum research centre in Bombay—Nalanda Dance Research Centre. She has a vast repertoire of choreographic work to her credit. For her significant contribution to the field of classical dance she has been honoured by various institutions. In 1991, she received 'Padmashri' from the Government of India.

शार्ङ्गदेव समारोह
ŚĀRṄGADEVA SAMĀROH

PROGRAMME — कार्यक्रम

Wednesday 23 February 6.30 p.m. — **बुधवार 23 फरवरी सांय 6.30**

PAKHAWAJ
Shankar Bapurao Shinde
and Uddhav Shinde

पखावज
शंकर बापूराव शिंदे एवम् उद्धव शिंदे

DHRUPAD
Zia Fariduddin Dagar and Ritwik Sanyal

ध्रुपद
ज़िया फरीदुद्दीन डागर एवम् ऋत्विक सान्याल

VEENA (CARNATIC)
Rajeshwari Padmanabhan

वीणा (कर्नाटक)
राजेश्वरी पद्मनाभन

Thursday 24 February 6.30 p.m. — **बृहस्पतिवार 24 फरवरी सांय 6.30**

VICHITRA VEENA
Gopal Krishna

विचित्र वीणा
गोपाल कृष्ण

PANCHAMAHABHUTA
(dance-drama)
C.V. Chandrasekhar and disciples
Nrityashree, Vadodara

पंचमहाभूत (नृत्य नाटिका)
सी.वी. चन्द्रशेखर एवम् उनके शिष्य
नृत्यश्री, वडोदरा

Friday 25 February 6.30 p.m. — **शुक्रवार 25 फरवरी सांय 6.30**

VOCAL (CARNATIC)
Madurai T.N. Seshagopalan

गायन (कर्नाटक)
मदुरै टी. एन. शेषगोपालन्

PERINI SHIVA THANDAVAM
Nataraja Ramakrishna and disciples
Perini International, Hyderabad

पेरिणी शिव ताण्डवम्
नटराज रामकृष्णा एवम् उनके शिष्य
पेरिणी इन्टरनेशनल, हैदराबाद

SANTA VANI (dance-drama)
Disciples of Kanak Rele
Nalanda Dance Research Centre
Bombay

सन्त वाणी (नृत्य नाटिका)
कनक रेले के शिष्य
नालन्दा डांस रिसर्च सेंटर, बम्बई